OPEN ACCESS

Scholars International Journal of Linguistics and Literature

Abbreviated Key Title: Sch Int J Linguist Lit
ISSN 2616-8677 (Print) | ISSN 2617-3468 (Online)
Scholars Middle East Publishers, Dubai, United Arab Emirates
Journal homepage: https://saudijournals.com

Review Article

पराशर झील में तैरते द्वीप टहला का रहस्य

शरदेंदू बाली, (MS, PhD)[1*]

[1]प्रोफेसर जनरल सर्जरी, तीर्थनकार माहावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद

DOI: https://doi.org/10.36348/sijll.2024.v07i08.002 | **Received:** 24.07.2024 | **Accepted:** 05.08.2024 | **Published:** 09.08.2024

***Corresponding author:** शरदेंदू बाली
प्रोफेसर जनरल सर्जरी, तीर्थनकार माहावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद

Abstract

प्राचीन काल में हिमाचल के मंडी जिले में, समुद्र तल से 9000 फुट की ऊंचाई पर स्थित, पराशर ऋषि की तपोस्थली रही पराशर झील में एक तैरता हुआ द्वीप है। ऊंचे पहाड़ों के मध्य में स्थित इस झील पर आने वाले पर्यटक इस तैरते हुए द्वीप को देखकर हैरान रह जाते हैं, क्योंकि ये द्वीप झील में अपनी जगह लगातार बदलता रहता है। हालांकि, ज्योतिष, आयुर्वेद, वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान, जल-विज्ञान और कृषि सहित, ज्ञान के चौदह क्षेत्रों के विशेषज्ञ महान ऋषि पराशर के लिए इस तैरते हुए द्वीप का निर्माण करना कोई कठिन काम नहीं रहा होगा। आज भी श्रीनगर की विशाल डल झील में बहुत से ऐसे तैरते हुए द्वीप बनाए जाते हैं और उनका उपयोग सब्जियाँ उगाने के लिए किया जाता है। सम्भव है कि प्राचीन ऋषियों ने, जो ऋषि पराशर के समकालीन रहे होंगे, कश्मीर में तैरते हुए सब्जियों के खेत बनाने की लंबे समय से चली आ रही कला का आविष्कार किया होगा। प्राचीन ऋषियों ने न केवल अपने आश्रमों और स्थलों में तैरते द्वीप जैसी रहस्यमय कलाकृतियों का निर्माण किया, बल्कि उन्होंने इन स्थलों को रहस्यमय नाम भी दिए जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुराग या संकेत के रूप में काम करते रहें। पराशर झील में तैरते हुए द्वीप का नाम टहला है, जो राजस्थान के अलवर जिले की उस बस्ती का नाम भी है, जहाँ से सरिस्का टाइगर रिजर्व के कठिन पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करने का मुख्य मार्ग हो कर गुजरता है। जब पांडवों को अपने निर्वासन के अंतिम वर्ष के दौरान अज्ञातवास में छिपे रहना था, तो सरिस्का जंगल के उबड़-खाबड़ इलाके ने उन्हें सुरक्षित आश्रय प्रदान किया था। इस सफल प्रयास में पराशर ऋषि ने तथा उनके पुत्र और वेदों के रचेता मुनि वेद व्यास ने पांडवों की सहायता की थी, तथा महर्श्री पराशर का धाम भी सरिस्का के प्रवेश मार्ग पर टहला के समीप ही स्थित है।

Keywords: पराशर झील, तैरता द्वीप, डल झील के तैरते सब्जी के बाग, टहला, सरिस्का टाइगर रिजर्व, पाराशर धाम, मण्डी जिला.

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

परिचय: हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में स्थित पाराशर झील के अंदर एक तैरता हुआ द्वीप है। समुद्र तल से 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित पराशर झील को देखने आने वाले हर किसी के लिए, यह तैरता हुआ द्वीप एक रहस्य बना हुआ है। पराशर ऋषि की तपोस्थली, यह झील एक आकर्षक कटोरा नुमा आकार की है , जो अनछुई घास के मैदानों से घिरी हुई है। झील के किनारे ऋषि पराशर को समर्पित एक प्राचीन सुंदर मंदिर है। यह पगोडा शैली में, लकड़ियों से बनी एक आकर्षक संरचना है। झील के साफ नीले पानी में नरकटों (reeds) से ढका एक तैरता हुआ अंडाकार द्वीप है (चित्र 1)। इसे स्थानीय लोग टहला कहते हैं, क्योंकि ये द्वीप झील के भीतर समय-समय पर अपनी स्थिति बदलता रहता है (टहला का अर्थ है चलता-फिरता)। इसी कारण यह मिट्टी का द्वीप पर्यटकों को रहस्यमय लगता है।

हालाँकि, महान ऋषि पराशर के लिए, जो ज्योतिष, कृषि, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद, भूविज्ञान और जल विज्ञान सहित ज्ञान के चौदह क्षेत्रों में विशेषज्ञ थे, एक तैरते हुए द्वीप का निर्माण करना कोई बड़ी चुनौती नहीं रही होगी। श्रीनगर की विशाल डल झील में अक्सर तैरते हुए द्वीप बनाए जाते हैं और उनका उपयोग सब्जी उगाने के लिए किया जाता है। कश्मीर में, तैरते हुए खेतों के निर्माण की तकनीक बहुत प्राचीन है जिसका आविष्कार संभवतः प्राचीन ऋषियों द्वारा किया गया था, जो ऋषि पराशर के ही समकालीन रहे होंगे।

अपने आश्रमों और स्थलों में महाऋषि पराशर ने तैरते हुए द्वीप जैसी रहस्यमयी संरचनाओं को रहस्यमय नाम भी दिए हैं, जो कि आगामी पीढ़ियों के लिए एक संकेत के रूप में काम आएं। जैसे पाराशर झील में इस तैरते हुए द्वीप का नाम टहला है, जो कि राजस्थान के अलवर जिले की उस बस्ती का नाम भी है, जहां पर अरावली के पहाड़ी इलाके में स्थित सरिस्का टाइगर रिजर्व में प्रवेश करने का एक मार्ग है। पांडवों को अपने निर्वासन के अंतिम वर्ष के दौरान गोपनीय तरीके से छिप कर रहना था, और सरिस्का के वन ने उन्हें सुरक्षित शरण उपलब्ध कराई थी।

तैरते हुए द्वीपों का निर्माण

पराशर झील का तैरता हुआ द्वीप टहला, श्रीनगर की डल झील में तैरते हुए सब्ज़ियों के बगीचों जैसा ही है (चित्र 2)।

इन तैरते हुए बगीचों को एक जगह से दूसरी जगह पर नावों द्वारा खींचा जा सकता है, और एक बार कोई जगह निश्चित हो जाने पर इन द्वीपों को विलो जाति के वृक्षों की कटिंग्स (कटे हुए तनों) से बांध कर इन पेड़ के तनों को झील के तल में गाढ दिया जाता है। इस तरह से तैरते बगीचों को एक स्थान पर स्थित कर लिया जाता है।

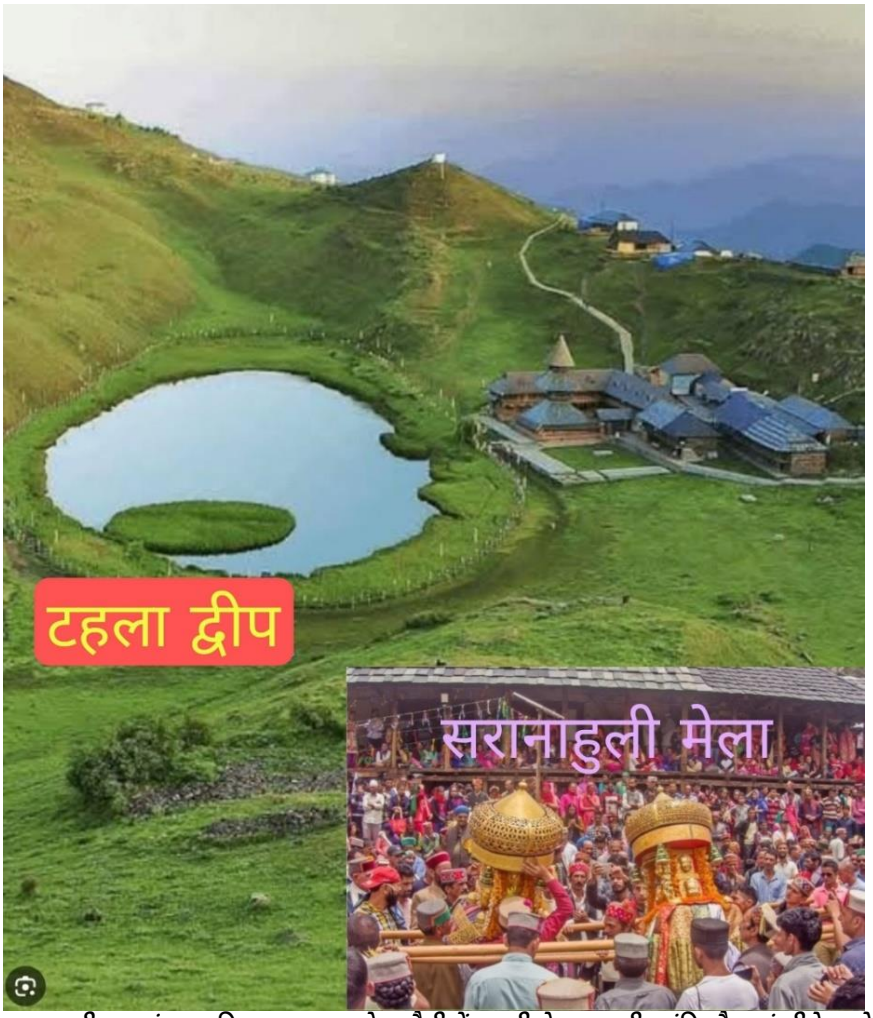

चित्र 1: मंडी जिले की पराशर झील, जहां पर ऋषि पराशर का पगोडा शैली में लकड़ी से बना प्राचीन मंदिर है। दाएं नीचे इनसेट में पाराशर ऋषि का सरानाहुली मेला दिखाया गया है, जो आषाढ़ महीने की पहली तारीख को लगता है।

चित्र 2: श्रीनगर के तैरते हुए बगीचे। इन द्वीपों को ज़रूरत के हिसाब से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है।

तैरते हुए बगीचे श्रीनगर की डल झील में उगने वाले खरपतवारों (reeds) से बनाये जाते हैं, जिनमें से ज़्यादातर टायफा ऑगस्टाटा और फ्राग्माइट्स कम्युनिस नस्ल के होते हैं। नाविक, इन खरपतवारों को इकट्ठा करने के बाद, एक मैली और चिपचिपी जड़ को दूसरी जड़ों के साथ दबाते हैं, और इसी तरह यह आपस में चिपक जाती हैं। समय के साथ खरपतवारों की जड़ें इतनी सघन और संगठित हो जाती हैं कि उन्हें फिर अलग करना मुश्किल होता है [1]। नाविक फिर reeds के ऊंचे-लंबे तनों को छाँट देते हैं और नीचे जो बचता है वो एक चटाई जैसा तैरता हुआ द्वीप होता है (जिसे स्थानीय भाषा में रढ़ कहा जाता है)।

जब रढ़ पर्याप्त रूप से परिपक्व हो जाता है, तो झील के तल से डंडों द्वारा घास-फूस और मिट्टी के ढेर निकाले जाते हैं और इन ढेरों को रढ़ पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर रख दिया जाता है। ढेरों को स्थानीय भाषा में पोखर के नाम से जाना जाता है और इनका उपयोग खीरे, खरबूजे, कद्दू और तरबूज जैसी कई तरह के फल एवं सब्जियों को उगाने के लिए किया जाता है [2]। नाविक अपने तैरते बगीचों के हवाई डंठलों को काटने के बाद, उनके ऊपर खरपतवार से बने रढ की दूसरी परत चढ़ाकर उनकी मोटाई को दोगुना भी कर सकते हैं, क्योंकि द्वीपों के नीचे लगातार पानी बहते रहने से उनकी मोटाई कम होती जाती है। इसी तरह दूसरी परत के ऊपर तीसरी परत लगाई जा सकती हैं, और इसी तरह आगे भी मोटाई बड़ाई जा सकती हैं। मैक्सिको में पुराने समय में चिनमपास नामक द्वीप बनाने के लिए इसी तरह की तकनीक का इस्तेमाल किया जाता था [3]। ये चिनमपास अभी भी खेती के लिये इस्तेमाल होते हैं।

चित्र 3: हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में स्थित पराशर झील। ब्यास नदी, इस जिले से होते हुए पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है, तथा पराशर और शुकदेव जी के मंदिर दोनों ही नदी के निकट ऊंचे पर्वत शिखरों पर स्थित हैं।

मंडी जिले में पराशर झील व अल्वर में पराशर धाम

ऋषि पराशर के नाम से प्रसिद्ध झील मंडी जिले के ऊंचे पहाड़ों में है, और यहाँ मंडी शहर और कुल्लू दोनों ही जगहों से पहुँचा जा सकता है। कटोरे के आकार की ये झील एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है, और इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 9000 - 10,000 फ़ीट (ASL) है। झील के चारों तरफ हरे-भरे घास के मैदान हैं, जहाँ पर चरवाहे गर्मियों में मैदानी इलाकों से अपने पशुओं को यहाँ चराने लाते हैं। झील का क्षेत्र सर्दियों में बर्फ से ढका रहता है और केवल गर्मियों में ही यहाँ पर पहुँचा जा सकता है। झील ब्यास नदी के समीप एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है, और स्थानीय मान्यता है कि ब्यास नदी का नाम पराशर ऋषि के विद्वान पुत्र वेद व्यास के नाम पर रखा गया है (चित्र 3)। क्षेत्र में एक और दर्शनीय पुराना मंदिर थट्टा में है, जो ऋषि पराशर के पोते और वेद व्यास के पुत्र शुकदेव मुनी को समर्पित है। इस तरह, मंडी जिले के इस पहाड़ी हिस्से में ऋषि पराशर की तीन पीढ़ियों का स्थान है। मंडी जिले के पूज्य देव भी ऋषि पराशर ही हैं। आषाढ़ महीने की पहली तारीख को पाराशर ऋषि का सरानाहुली मेला लगता है, और स्थानीय श्रृद्धालू हजारों की संख्या में झील पर मंदिर के दर्शन व पूजा करने आते हैं (चित्र 1)।

राजस्थान के अलवर जिले में सरिस्का टाइगर रिजर्व के पहाड़ी क्षेत्र में भी ऋषि पराशर का आश्रम है। ये जगह एक ऊंची खड़ी चट्टान के शिखर पर स्थित है, जो वन्य टाइगर रिजर्व के एक किनारे पर है, और इसमें एक बारहमासी स्रोत भी है (चित्र 5)।

चित्र 4. ***सरिस्का क्षेत्र का मानचित्र : हरे रंग में ऊंचा चट्टानी वन का क्षेत्र है, जो केकड़े के आकार का है, तथा वन में प्रवेश करने का मुख्य मार्ग दक्षिण से पराशर थाम व टहला हो कर जाता है। उत्तर से भी एक प्रवेश मार्ग है, और यह दोनों मार्ग बैंगनी रंग के तीरों से दर्शित किये गये हैं।***

© 2024 | Published by Scholars Middle East Publishers, Dubai, United Arab Emirates

स्रोत का जल एक चट्टानी कुंड में भर जाता है, और आगे बह कर झरने के रूप में नीचे गिरता है। चट्टान के शिखर से, केकड़े के आकार के (चित्र 4) विशाल पथरीले पहाड़ी जंगल के दक्षिणी प्रवेश मार्ग का नज़ारा साफ दिखाई देता है। पौराणिक काल में ये सुविधाजनक जगह आक्रमणकारियों पर नज़र रखने और सरिस्का जंगल में छिपे लोगों की सुरक्षा के लिए रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण थी। यहीं पर पांचों पांडवों ने निर्वासन के अपने अंतिम वर्ष में इन घने जंगलों का इस्तेमाल छिपने के लिए किया था, क्योंकि ये वो समय था जब उनके छिपने के स्थान का गुप्त रहना बहुत जरूरी था। वनवास की शर्तों में से एक यह भी थी, कि यदि वनवास के अंतिम वर्ष में उनके (पांडवों के) ठिकाने का पता चल गया, तो पांडवों को वनवास की पूरी अवधि फिर से बितानी पड़ेगी। इसलिए घुसपैठियों और जासूसों को दूर रखना जरूरी था। राजनीतिक कारणों से , ऐसे उपयुक्त छिपने के स्थान की जरूरत थी, जो हस्तिनापुर और पांडवों की पूर्व राजधानी, इंद्रप्रस्थ से ज्यादा दूरी पर भी न हो। विराट नगर (आधुनिक अलवर) में, मंडावरा और टहला कस्बों के बीच स्थित सरिस्का का पहाड़ी जंगल, उपरोक्त दृष्टिकोण से एक आदर्श जगह थी।

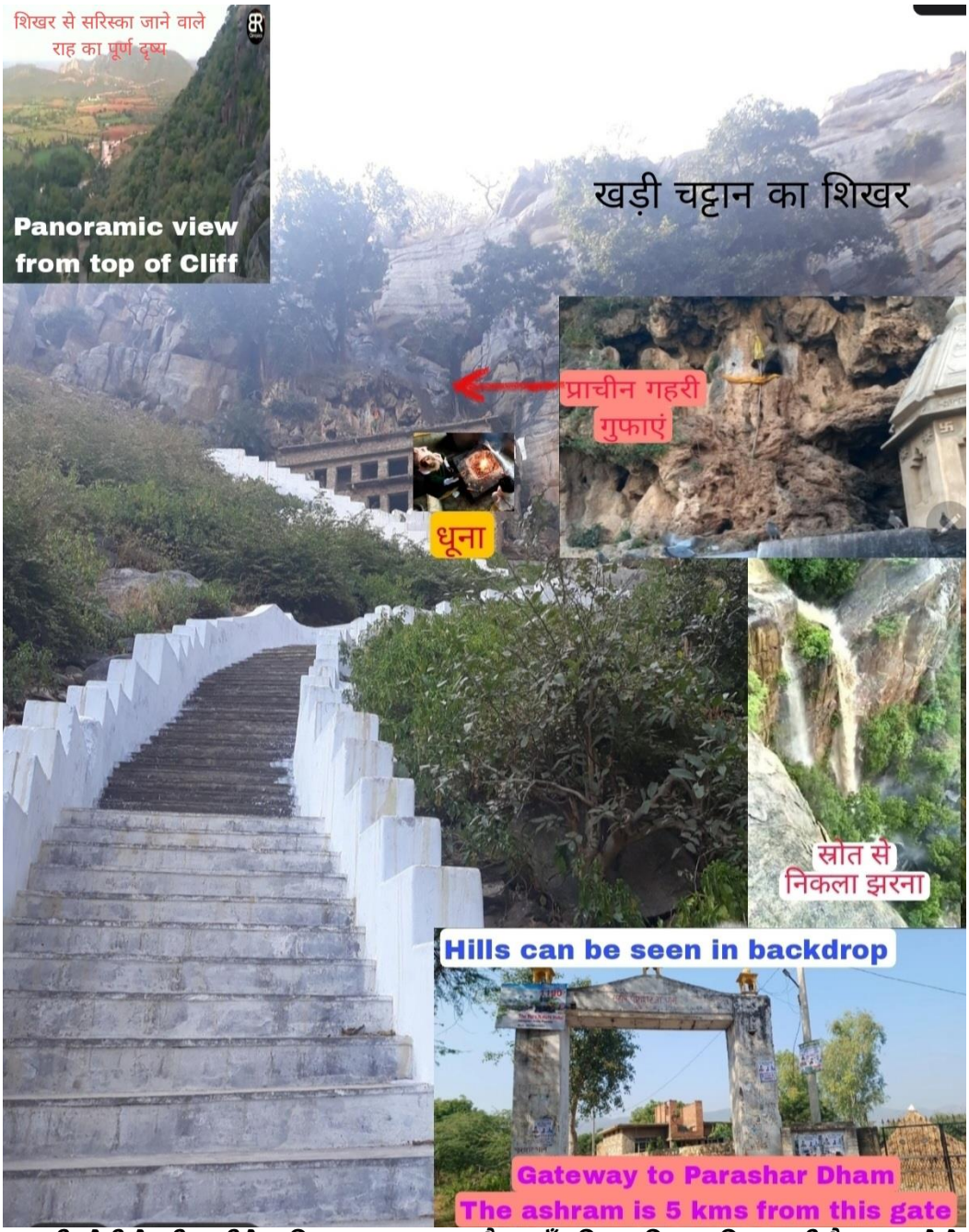

चित्र 5: चट्टान की चोटी के ठीक नीचे ऋषि पराशर का धूना है, जहाँ पवित्र अग्नि प्रज्वलित रहती है। इस धूने के पास, खड़ी चट्टान में दो गहरी गुफाएँ हैं, जो कभी ऋषियों की शरणस्थली के रूप में काम करती थीं। शिखर पर जल स्रोत भी है।

सरिस्का टाइगर रिजर्व के निकट टहला गांव व पहाड़ी किला

सरिस्का वन के दक्षिणी प्रवेश-द्वार के समीप जो शहर है, उसका नाम टहला है, जो नाम पराशर झील में तैरते द्वीप का भी है। उल्लेखनीय है कि टहला क्षेत्र में तथा मंडी जिले में, दोनों स्थानों में ही ऋषि पराशर की आज भी देव तुल्य मान्यता है। तथा दोनों क्षेत्रों में पराशर मुनी के मंदिर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों का दर्जा रखते हैं। टहला शहर के बिल्कुल निकट की पहाड़ी पर एक पुराना किला है, जो खाली पड़ा है। इसी पहाड़ी पर भैरों का एक प्राचीन मंदिर भी विराजमान है, जिसका होना इस बात की तरफ संकेत करता है कि जहाँ अब किला है, वहां कभी एक बस्ती रही होगी, तथा टहला गाँव उसी पहाड़ी के ऊपर बसा हुआ होगा। ये बात विश्वसनीय लगती है, क्योंकि बारिश के मौसम में पूरा इलाका अपने पहाड़ी परिवेश के कारण बाढ़ की चपेट में आ जाता है। बारिश के दौरान, पानी ढलानों पर गिरता है और कटोरे के आकार के केंद्रीय क्षेत्र की ओर बह कर इकट्ठा हो जाता है, जहां टहला शहर स्थित है (मानचित्र देखें, चित्र 4)।

दरअसल, टहला के आसपास बड़ी-बड़ी उथली झीलें हैं और बरसात के मौसम में पूरे इलाके में इतना पानी भर जाता है कि सिर्फ टहला की पहाड़ी ही पानी से ऊपर रह जाती है। बाढ़ की स्थिति में टहला पहाड़ी एक द्वीप की तरह दिखाई देती है, जैसा कि पराशर धाम की ऊंची चट्टानी शिखर से देखा जा सकता है। इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि पराशर मुनी ने दोनों स्थानों को एक दूसरे से सम्बंधित करने के लिए टहला गांव को ये नाम दिया। पराशर मुनी ने नामकरण के इस जुड़वा तरीके का प्रयोग अन्य क्षेत्रों में भी किया है। उदाहरण के लिए, पराशर झील की पहाड़ी के उस पार के पहाड़ को मंछोदरी कहा जाता है। पराशर ऋषि की सहभागिनी का नाम मंछोदरी था, हालाँकि उन्हें सत्यवती और मत्स्यगंधा के नाम से भी जाना जाता था। मत्स्यगंधा ने यमुना द्वीप पर पराशर के पुत्र (वेद व्यास) को जन्म दिया था, और मथुरा के समीप यमुना नदी के इस द्वीप को आज भी स्थानीय लोग मंछोदरी के नाम से ही पुकारते हैं [4]।

उपसंहार

पराशर झील घूमने आने वाले पर्यटकों के लिए झील में तैरता हुआ द्वीप हमेशा से एक रहस्य रहा है। ऋषि पराशर के मंदिर में पूजा करने आए श्रद्धालुओं की कई पीढ़ियों ने भी इस बात को लेकर जिज्ञासा दिखाई है कि आखिर एक टापू पानी पर तैर कैसे सकता है। लेकिन तैरते द्वीप बनाने की तकनीक कश्मीर में सदियों पुरानी है, और इसे डल झील में तैरते सब्जियों के बगीचों को देखकर समझा जा सकता है। कश्मीर प्राचीन काल से ही एक तीर्थ स्थान रहा है, और सहस्राब्दियों से ऋषि-मुनियों द्वारा यहाँ भ्रमण किया जाता रहा है। प्राचीन ऋषियों ने ही संभवतः कश्मीर में तैरते हुए वनस्पति द्वीप बनाने की विधि का आविष्कार किया था। वैसे भी, भारत में भिक्षुकों (साधुओं) की घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण यह बहुत संभव है कि ऋषि पाराशर ने पाराशर झील में तैरते हुए द्वीप, जिसे टहला कहा जाता है, को बनाने के लिए कश्मीर की तकनीक का उपयोग किया हो।

सन्दर्भ

1. Floating Gardens of Dal Lake, Daily Excelsior, June 1, 2014, by Prof. (Dr) R.D. Gupta. https://www.dailyexcelsior.com/floating-gardensdal-lake/
2. Dal Lake: A Monograph by Kashmir Life, December 31, 2023, by Prof Dr MRD Kundangar. https://kashmirlife.net/dal-lake-a-monograph-335533/
3. Robles, B., Flores, J., Martínez, J. L., & Herrera, P. (2018). The chinampa: An ancient Mexican sub-irrigation system. Irrig and Drain. *Published online in Wiley Online Library* (wileyonlinelibrary.com) DOI: 10.1002/ird.2310.
4. Bali, S. (2015). Birth place of Maharishi Ved Vyas, the Author of the Vedas and the Puranas. *Indian Journal of Research*, *9*(2), 58-60. https://www.researchgate.net/publication/377019054 Birth place of Maharishi Ved Vyas author of the Vedas and Puranas

© 2024 | Published by Scholars Middle East Publishers, Dubai, United Arab Emirates